महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
Accredited with 'A' Grade by NAAC

शिक्षा मूल्य गर्भित प्रक्रिया है - कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन

विवि का शिक्षा, मनोविज्ञान विभाग तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली का संयुक्त आयोजन

वर्धा दि. 28 मार्च 2015: शिक्षा एक मूल्य गर्भित प्रक्रिया है। शिक्षा हमें वैकल्पिक दृष्टि और विवेक प्रदान करती है। समाज में मूल्य शिक्षा के प्रसार के लिए शिक्षा एक प्रभावी माध्यम बनाना चाहिए। समाज से शिक्षा का सीधा संबंध विकसित हो तभी मूल्यों का संचार और तीव्र गति से हो पाएगा। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में शिक्षा एवं मनोविज्ञान विभाग तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 28, 29 एवं 30 मार्च को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन के अवसर पर अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे। इस अवसर पर एनसीईआरटी, नई दिल्ली के निदेशक बी. के. त्रिपाठी, दिल्ली विश्वविद्यालय में महिला अध्ययन व विकास विभाग की निदेशक प्रो. भारती बावेजा, दिल्ली विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के अधिष्ठाता प्रो. आनंद प्रकाश, दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विभाग के प्रो. प्रकाश नारायण, विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा मंचासीन थे।

शिक्षा विभाग के द्वारा 'शिक्षण, सीखने और जानने की दृष्टियों में बदलाव' विषय पर तथा मनोविज्ञान विभाग द्वारा 'आधुनिक जीवन में मूल्य संकट : समाज वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य और हस्तक्षेप' विषय पर आयोजित इस तीन दिवसीय संगोष्ठी का उदघाटन शनिवार दि. 28 को हबीब तनवीर सभागार में मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। संगोष्ठी में महाराष्ट्र, हरियाना, छत्तीसगड़,

बिहार, आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना आदि राज्यों से प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि आज कल मूल्य शिक्षा की बात हर मंच से उठ रही है। उन्होंने कहा कि शिक्षा स्वयं एक मूल्य है और इसे पाने का एक माध्यम भी है। उन्होंने सिंगापुर का उदाहरण देते हुए कहा कि वहा सज्जनता और विनम्रता की वजह से कार्य संस्कृति का विकास हुआ है और आज वह देश दुनिया के तमाम देशों के सामने अनुसाशित देश का एक अच्छा उदाहरण बना हुआ है।

शिक्षा के संस्थाकरण की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि इससे शिक्षा का नुकसान हो रहा है और एक खाचे में ढालकर शिथार्थी तैयार किए जा रहे हैं। उन्होंने आग्रह किया कि शिक्षा को समाज से जोड़कर ही

अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

बीज वक्तव्य में प्रो. भारती बावेजा ने उच्च शिक्षा की प्रकृति और लक्ष्य की बात करते हुए कहा कि व्यवहारवाद और संज्ञानवाद समान रूप से चलते हैं। मनोविज्ञान को समझने के लिए संस्कृति को समझना अत्यंत आवश्यक है। नैतिक मस्तिष्क के विषय को लेकर उन्होंने शिक्षा की प्रकृति और पढ़ाने के तौर तरीकों पर अपनी बात रखी। उन्होंने माना कि शिक्षा का स्वरूप बदलते परिदृश्य में बदलना अनिवार्य है।

प्रो. आनंद प्रकाश ने आधुनिक समाज में मूल्य संकट विषय पर मुख्य वक्तव्य में कहा कि शिक्षा हमें मुक्ति देती है। दवा शरीर को स्वस्थ रखती है वेसे नैतिकता समाज को स्वस्थ रखती है। उन्होंने अनेक अनुसंधानों का जिक्र करते हुए मूल्य शिक्षा, मूल्य शिक्षा का संकट आदि विषयों अपने व्याख्यान में समाहित किया। एनसीईआरटी के निदेशक प्रो. बी. के. त्रिपाठी ने नई शिक्षा नीति और और शिक्षा के सिद्धांतों पर अपने विचार प्रकट किए। संगोष्ठी समन्वयक व आयोजन सचिव तथा शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि समाज ही ज्ञान के निर्माण में और उसे समझने में मदद करता है।

विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागियों का उन्होंन स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया। उदघाटन समारोह का संचालन शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर ऋषभ मिश्र ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मनोविज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर अरूण प्रताप सिंह ने किया। उदघाटन समारोह में विभिन्न विद्यापीठों के अधिष्ठाता, अध्यापक, अधिकारी, शोधार्थी, प्रतिभागी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।